



बेक प्रजाद दिवदी

७

“अतनुप्रसुवम्”

• पाठिे प्रसुदिं कतः :-

आरुिनिा अंशुत-सहितेः एक अतनु प्रसुि-
‘अतनुप्रसुवम्’ महाकाव्ये, २००१ - २००२ प्रकाशने विदेशी-
अकादमीतः आन्दोलन अर्कतः इतिहास वरुत प्रसुदिं अरु-
महाकाव्ये अतनुतः। दोनतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः
अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः
अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः
अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः

• पाठिे-कुदमः :-

- १। अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः
- २। अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः
- ३। २००१ अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः
- ४। अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः
- ५। अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः अतनुतः



- member, Academic Council, 1970 to retirement,
- Emeritus Fellowship of the University Grants Commission, Government of India 1990 to 1992.
- Lifetime Emeritus professorship since 1993.

4. Member of various state and National Bodies.

- Central Sanskrit Board, Govt. of India.
- Kalidas Samiti, Govt. of M. P. Bhopal.
- Kalidas Samiti, Vikrama University, Ujjain.
- Sanskrit Samiti, Govt. of Uttar Pradesh, Lucknow.
- Sahitya Academy, New Delhi.
- Board of Studies of the University of Aizawl, Raipur.
- Grant-in-Aid Committee, Ministry of Human Resource Development, New Delhi 2005 to 2008.
- Board of management, Lal Bahadur Shastri Rastriya Sanskrit vidyapeetha, New Delhi 2011 to 2016.

काव्यरचना व अन्य रूति :

'साहित्यभाष्ये वी प्रथमिहो है' - प्रथे इतिर इदमेवमक
अथार्थ इव प्रमाद द्विती अहकृत अहितेव प्रकजन
लक्षप्रतिष्ठा अहकवि, नाटिककार प्रथे समीपक, अथार्थ द्विती
काव्यभाष्ये समर्थे प्रथे अहकृत कवि, तिसि अहकृत समर्थे
रुद्रा द्विती, तिसि नापु तंरु अहकृत रति, तंरु
नेत्रनीयक आभवा प्रथेन तिसि रति अहकृत नाति



प्रथमतः तत्र निदेश मूढि, द्वितीयतः मन्वन्त-काव्यमनु त
मन्वन्तमनु चिदिन्त्येव ननुन सिद्धान्तु प्रवर्तन, तृतीयतः
अतीतमन्वन्तुके हचिन्त्य प्रवर्तमानु मन्वन्तु,

महाकाव्य, काव्य, नाटक चिदिन्त्येव निदेश मूढि 19 टि,

महाकाव्य : इन्द्रसौतमन्त्रम्, सातसुमन्त्रम्, कुम्भारचिन्त्यम्,

काव्य : मन्वन्तम्, प्रथमः, श्रीवेणुसुन्दरीम्, मन्वन्तसौतम्,
प्रतीका, कल्पसुन्दरीम्, कल्पसुन्दरीम्, कल्पसुन्दरीम्,
कल्पसुन्दरीम्, अमरानलतिम्, अमरीकठेवम् इत्यादि,

नाटिका : मूढिका, मन्वन्तसुन्दरीम्,

नवीनमन्वन्तुम् : काव्यालङ्कारकारिका, नाट्यालङ्कारम्,
अलङ्कारम्, इन्द्रसौतमन्त्रम्, अमरीकठेवम् -
काव्यिकम् ।

अतीतमन्वन्तुके हचिन्त्य प्रवर्तमानु :

कालिदास मन्वन्तुके, कालिदासमन्वन्तु-
प्रवर्तमानु, कालिदासमन्वन्तुके मन्वन्तुके
मन्वन्तुके मन्वन्तुके इत्यादि मन्वन्तुके 32 टि मन्वन्तुके,

कथा : मन्वन्तुके, कल्पसुन्दरी, कल्पसुन्दरी,

मन्वन्तुके : आनन्दवर्तन, कल्पसुन्दरी मन्वन्तुके मन्वन्तुके
मन्वन्तुके, मन्वन्तुके मन्वन्तुके का आनन्दवर्तन
मन्वन्तुके,

हिदीकाव्य : मन्वन्तुके, मन्वन्तुके मन्वन्तुके
मन्वन्तुके-मन्वन्तुके, मन्वन्तुके मन्वन्तुके,
मन्वन्तुके मन्वन्तुके,

सम्पादन : आनन्दवर्तन, मन्वन्तुके, मन्वन्तुके मन्वन्तुके



आचार्य द्विवेदी प्रभु २००८ 'सर्वप्रथम हिन्दी,
ईश्वरी एवं संस्कृत भाषा प्रकाशित हुए। 'अज्ञानमृत
वृत्तम्', 'शिवसहिष्णुताः' एवं लोकप्रिय ग्रन्थ एवं हिन्दी
अनुवाद के लिये।

सम्मान एवं पुरस्कार :

संस्कृत साहित्ये उत्कृष्ट सेवा के लिये अनेक पुरस्कार
एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें - राष्ट्रपति पुरस्कार,
जी. वी. कान्ठ स्मरण पुरस्कार, राष्ट्रपति पुरस्कार,
श्रीवती अलंकार पुरस्कार इत्यादि, निम्न एवं प्रथम-
आनुवंशिक के लिये पुरस्कारों का प्रदान कर रहा।

International Awards :

1. Mahamahopadhyay P. V. Kane Gold Medal,
The Asiatic Society of Mumbai, 1983.
2. Honorary Fellowship, The Asiatic Society of
Mumbai, 1995.
3. Srivani Alankarana by Ramkrishna Jayadaya
Dalmia Srivani Nyas, New Delhi, 1999.
4. Vishwabharati Award, Uttar Pradesh Sanskrit
Samsthan, Lucknow, 2005.

National Awards :

1. Certificate of Honour by President of
India, Honorable Neelam Sanjeev Reddy
in 1978: the highest literary award
for lifetime achievement in Sanskrit.
2. Sahitya Akademi Award, Sahitya Akademi,
New Delhi, 1991.



3. Kalpavali Puraskar, by Bharatiya Shasa Parishad, Calcutta. 1993.
 4. vacastafi puraskar, by K.K. Birla Foundation, New Delhi, 1991.
 5. Honorary Emeritus Fellowship, by University Grants Commission, New Delhi, 1991-1993.
 6. Rastriya Sanskrit Veda Vyasa Puraskar of 2005, conferred by University Grants Commission, New Delhi, 2010.
 7. Nana Sahab Peshwa Dharmaika and Adhyatmika Puraskara, Devadeveshvara Sanathana, Pune 2010.
 8. Maharsi vedavyasa Samman, Delhi Sanskrit Academy, New Delhi, 2012.
 9. Kabir Samman, Highest Literary Honor of Govt. of Madhyapradesh, Ministry of Culture for outstanding contribution to Indian Poetry, awarded by India's President Mahansahim Ramnath Kovind, Bhopal, 2017.
 10. Etc
- State and Local Awards:

1. Four times Sahitya Puraskara Uttar Pradesh Sanskrit Samsthan. Lucknow, 1975, 1979, 1980, 1982.
2. Two times Mitra Puraskara, Madhyapra- desh Sahitya Parishad, Bhopal. 1965, 1971,
3. Valmiki Puraskara, Uttar Pradesh Sanskrit Samsthan, 2004.



Honorary Titles:

1. Sahitya Ratna from Jagad guru Shankara Charya of Kameli peetha Swami Jayendra Saraswati, 2010.
2. Pandita Ratna from Shri Ramabhadracharya vikalanga विश्वविद्यालय, Chitranuta, 2008.
3. Ratna Sadasya, the highest honorary fellowship of Kalidasa Sanskrit Akademi, Ujjain 2007.
4. Mahamahopadhyaya by Hindi Sahitya Sammelan, Allahabad, 2003.
5. Etc.

विभिन्न रचना एवं आचार्य द्विवेदी:

आशुतोष चिदम्बर प्रभू, कश्चित् प्रश्न-कारणीय
अभ्यास ३ अक्षर-वर्ण-वैकल्पिक आचार्य द्विवेदी द्वारा
रचित 'उत्तर-सीताचरितम्' प्रश्न-उत्तर-संग्रहम् 'संस्कृत-
अभ्यास-सहिते' प्रश्न-उत्तर-संग्रहम्, द्विवेदी महाकाव्य-विश्व-
वर्ष-प्रश्न-संग्रहम्, 'उत्तर-सीताचरितम्' महाकाव्य-
सीतार-उत्तर-रचित-एक-अभ्यास-काल-लेख-एवम्-
विशेष-काल-उद्घाटित-करा-हमे-है। प्रमाण-संग्रह-काल-
सीतार-प्रमाण-रचित-अनेक-करा-हमे-है। कवि-द्विवेदी-
सीतार-आर्य-अभ्यास-प्रतीक, सीतार-रचित-मठ-दिने-
कवि-निर्णय-संग्रह, मठ-३-अभ्यास-सीतार-करा-हमे-
द्विवेदी-महाकाव्य 'उत्तर-सीताचरितम्' प्र-उत्तर-
अभ्यास-संग्रह-संग्रहित-अनेक-रचना-एवम्, अक्षर-
अभ्यास-दिने-एवम्-एते-संग्रहित-कार्य-करा-हमे-
अभ्यास-काल-अनेक-रचित-उद्घाटित-करा-हमे-है। प्रश्न-उत्तर-
विश्व-अभ्यास-काल-निर्णय-प्रश्न-उत्तर-संग्रह-



ବର୍ତ୍ତମାନ ଐତିହାସିକ ସମ୍ପର୍କ,

କାଳିଦାସ ବାଞ୍ଛମୟେ ଋଷଭେ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ଦ୍ଵିତୀୟ ଶତ
ଆର୍ୟ୍ୟ କବିତାମ୍ ପ୍ରକୃତିର ଋଷି ସମୁଦାୟେ ବର୍ତ୍ତମାନ ସମ୍ପର୍କେ
ଅର୍କନ କରାହେନ। କବିତାମ୍ ପ୍ରକୃତିର ଜୀବନ ସମୁଦାୟେ ଋଷି ସମୁଦାୟ
ଓଡ଼ିଆ ସମ୍ପର୍କେ ବର୍ତ୍ତମାନ ସମ୍ପର୍କେ ସୁନ୍ଦର ଚିତ୍ର ଅର୍କନ
କରାହେନ। ଋଷି ଲେଖନୀତେ।

ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ଦ୍ଵିତୀୟ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ଯୋଗ୍ୟାତ୍ମକ ଦାର୍ଢ଼ନିକ ତତ୍ତ୍ଵେ ଋଷି
ସମ୍ପର୍କେ ଋଷିକାନ୍ତେ ହେତୁ ଦେଖାତେ- ୧୯୯୫ ମ୍ ପ୍ରକାଶିତ ଯୋଗ୍ୟ
'ପ୍ରତିଷ୍ଠା' ତେ- ଋଷିକାନ୍ତେ ଋଷିକାନ୍ତେ ଅର୍କନେତା ବର୍ତ୍ତମାନେ
କୋଷାଦ୍ୟେ ଋଷିକାନ୍ତେ ସୁନ୍ଦର ଚିତ୍ର ଋଷି ଲେଖନୀତେ।

ଶତମ୍ 'ସୁନ୍ଦର' ନାଟିକାଟି ସମ୍ପର୍କେ ଋଷିକାନ୍ତେ ବର୍ତ୍ତମାନେ
'Romeo and Juliet' ବର୍ତ୍ତମାନେ ଅର୍କନେତା ଋଷିକାନ୍ତେ
'ସୁନ୍ଦର' ନାଟିକାଟି ପ୍ରାକାଶିତକାଳେ ଦ୍ଵାରା ଋଷିକାନ୍ତେ ବର୍ତ୍ତମାନେ
ହେ ନେ ଆଦିକେ ଋଷିକାନ୍ତେ କରାହେନ। 'ଋଷିକାନ୍ତେ' ଋଷିକାନ୍ତେ
କବିତାମ୍ ଋଷିକାନ୍ତେ ଅର୍କନେତା ଦ୍ଵାରା ଋଷିକାନ୍ତେ ହେତୁ
'ଋଷିକାନ୍ତେ' କାଳେ ଋଷିକାନ୍ତେ ଋଷିକାନ୍ତେ କରାହେନ। ବର୍ତ୍ତମାନେ
୧୯୯୫ ମ୍ ଋଷିକାନ୍ତେ ଋଷିକାନ୍ତେ ଅର୍କନେତା ଦ୍ଵାରା ଋଷିକାନ୍ତେ
ହେତୁ ବର୍ତ୍ତମାନେ ଋଷିକାନ୍ତେ ସୁନ୍ଦର ଚିତ୍ର ଋଷିକାନ୍ତେ କରାହେନ।

• ଜ୍ଞାତନ୍ତ୍ରୀମୁଦ୍ରଣ •

'ଜ୍ଞାତନ୍ତ୍ରୀମୁଦ୍ରଣ' ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ଦ୍ଵାରା ପ୍ରକାଶିତ ଦ୍ଵିତୀୟ 'ଋଷିକାନ୍ତେ'
ଦ୍ଵାରା ପ୍ରକାଶିତ ଋଷିକାନ୍ତେ, ୧୯୯୫ ମ୍ ଋଷିକାନ୍ତେ ୧୯୯୫ ମ୍ ଋଷିକାନ୍ତେ
ବର୍ତ୍ତମାନେ ଋଷିକାନ୍ତେ, ୧୯୯୫ ମ୍ ଋଷିକାନ୍ତେ ବିଦ୍ୟୋତ୍ତେ ଦ୍ଵାରା ଋଷିକାନ୍ତେ
୨୦୧୨ ମ୍ ଋଷିକାନ୍ତେ ଋଷିକାନ୍ତେ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ଦ୍ଵାରା ଅର୍କନେତା ଦ୍ଵାରା
ଋଷିକାନ୍ତେ ପ୍ରକାଶିତ ହେତୁ ହେତୁ ହେତୁ, ୧୯୯୫ ମ୍ ଋଷିକାନ୍ତେ ଋଷିକାନ୍ତେ
ଋଷିକାନ୍ତେ ଋଷିକାନ୍ତେ ଋଷିକାନ୍ତେ (୧ - ୨୩ ମ୍) ଋଷିକାନ୍ତେ
ଦ୍ଵାରା ଅର୍କନେତା ହେତୁ ଋଷିକାନ୍ତେ କରାହେନ, ୧୯୯୫ ମ୍ ଋଷିକାନ୍ତେ
ଋଷିକାନ୍ତେ ଋଷିକାନ୍ତେ ଋଷିକାନ୍ତେ ଋଷିକାନ୍ତେ ଋଷିକାନ୍ତେ



ইতিহাস আশ্রিত স্মৃতি স্মরণের কারণে প্রধান ঘটনাকে
পারম্পর্য নামে অভিহিত। প্রধানত ইতিহাসে ঘটনাবলি অধিকাংশ
সমাচারের স্মৃতি স্মরণের দ্বারা প্রমাণিত। এই মহাকাব্যের
১-২৮ অর্ধে বর্ণিত অর্ধে আচার্য দ্বিতীয়ে হারতের
অন্য প্রকার প্রাপ্ত হতে আশ্রয় করা হয়।

'জাতন্যাসমূহম্' মহাকাব্যের 'জাতন্য' নামের অর্থ
যেখানে যা ইতিহাসে উল্লিখিত হয়েছে। জাতন্য, কাম্বীর
ইতিহাসে মোক্ষের জন্য প্রাপ্ত আচার্যের নাম কারণ প্রত্যেক
জীবনটির স্মৃতি তা স্মরণে আশ্রিত কিংবা ইতিহাসে উল্লিখিত
অন্য স্মৃতি প্রাপ্ত দ্বারা প্রমাণিত। 'আ: জাতন্য' বৈশিষ্ট্যের
নাম। জাতন্যসিদ্ধি হল অর্থাৎ অর্ধের উল্লেখ ইতিহাসে।
জাতন্যের দ্বিতীয় অর্থ হল কাম্বীর জীবিত। 'জাতন্যাসমূহম্'
অর্থ: এখানে ইতিহাসের স্মৃতি: তু কথ্যম্ জাতন্যসমূহম্
অর্থ: ইতিহাসে ইতিহাসের স্মৃতি দ্বারা ইতিহাসে অর্থাৎ প্রাপ্ত
কারণের জন্য যে প্রকারে প্রমাণ করা হয় তাই ইতিহাসের
অর্থের পারম্পর্য বর্ণনা যে স্মৃতি বর্ণিত হয়েছে তাই স্মৃতি
হল 'জাতন্যসমূহম্'। এই স্মৃতি প্রকারের ইতিহাসে অর্থাৎ
জীবিত। ইতিহাসের ইতিহাসে উল্লিখিত হয়েছে অর্থাৎ
দিকে প্রাপ্ত জাতন্য অর্থের ইতিহাসে কাম্বীর উল্লেখ
হয়েছে। এই মহাকাব্যে ইতিহাসে উল্লিখিত, ইতিহাসে উল্লেখ
করা প্রকারে প্রমাণিত। ইতিহাসে উল্লেখ করা হয়েছে
অর্থাৎ ইতিহাসে।
অর্থাৎ ইতিহাসে উল্লেখ করা হয়েছে।
অর্থাৎ ইতিহাসে উল্লেখ করা হয়েছে।
ইতিহাসে উল্লেখ করা হয়েছে।



ଜୀବନର ଚିତ୍ତିତ୍ତ ଦିନ ସ୍ଥାନ ସିଦ୍ଧ ହେଉଛି । ମଧ୍ୟ ୧୯୦ ବହୁତର
ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟ ବ୍ୟକ୍ତିଗତିକ ଏବଂ ପୁରାତନିକ ଅନୁଗମନର ଅନ୍ତର-
ଦ୍ୱିତୀୟ ପୁରାତନ, ପ୍ରାୟତନିକାର ଆର୍ଯ୍ୟ ଅଗ୍ରଣୁ ସୁଧର ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟ
ଓପେନାତନ କରାହେନ । ଏହି ସମ୍ବନ୍ଧାତ୍ମକ କାର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ପ୍ରମାଣ
ଏବଂ ବର୍ତ୍ତମାନ ଶିକ୍ଷାଗତ ସାହିତ୍ୟର ଆର୍ଯ୍ୟ କରା ହେଉଛି ।

ଏହି ସମ୍ବନ୍ଧାତ୍ମକ ଅନୁଗମନର ଏବଂ ଏହାର ଏ ଆର୍ଯ୍ୟ
ଲେଖନର ଦାୟିତ୍ୱ ବା ଚିନ୍ତାଧାରା - ଡେବନାୟକର କରାହେନ କାଠି,
ହସନ - ମଧ୍ୟରୁ ଆର୍ଯ୍ୟ ନାମ - କିରିକାରଣ, ୨ ଅର୍ଥ - ଅଗ୍ରଣୁ
ଅକ୍ଷୟାଧାର, ୩ ଅର୍ଥ ନାମ - ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର, ୪ ଅର୍ଥ ଆର୍ଯ୍ୟ ନାମ
କମଳାବତୀପୁରୀ, ୫ ଅର୍ଥ ନାମ - କମଳାପୋହନ, ୧୦ ଅର୍ଥ
ଆର୍ଯ୍ୟ ନାମ - ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟାଧାରଣ ଇତ୍ୟାଦି ।

ଦ୍ୱିତୀୟରେ ଅନ୍ତର ଦ୍ୱିତୀୟ ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟ ଆର୍ଯ୍ୟତା ଅନୁଗମ
ଅନୁଗମନର ଶାନ୍ତି ବୈଶାଧାର ବାଣୀ ଲକ୍ଷ୍ମୀବର୍ଦ୍ଧ ଏବଂ ଅନୁଗମ ନିବନ୍ଧନ
ସ୍ଥାନ ବିରାହେନ । କାଠି ଲକ୍ଷ୍ମୀବର୍ଦ୍ଧ ଏବଂ ଅନ୍ତର ଅନୁଗମ ଓପେନାତନ
କାର୍ଯ୍ୟ ଓକ୍ତ ଲକ୍ଷ୍ମୀବର୍ଦ୍ଧ ଅବତାର, କାର୍ଯ୍ୟ, ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟ ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟ
ଇତ୍ୟାଦି ଚିନ୍ତାଧାରା ସୂଚିତ କରାହେନ ।

ଏହି ସମ୍ବନ୍ଧାତ୍ମକ କାର୍ଯ୍ୟ ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟ କାଠି ଆନୁଗମ-
କାର୍ଯ୍ୟର ଏ ସୁଦ୍ଧର ଚିନ୍ତାଧାରା ଏବଂ ଅନୁଗମ । ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟ ଅନୁଗମ -

“ କାନ୍ତିର୍ଲତା, ଚେତି ଏବଂ ଅର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରମାଣ,
କାନ୍ତି: ପ୍ରମାଣିତ କିନ୍ତୁ ଅର୍ଯ୍ୟ ଅନୁଗମ ।
ଲୋକମଣିଷୁ ତତ: ସମୁଦିଷ୍ଟାନ୍ତି,
କାନ୍ତିମାନ୍ତୁମାନ୍ତି, ଏବଂ ବିଶ୍ୱାସିଦାନ୍ତି ॥ ”

ଏହି ସମ୍ବନ୍ଧାତ୍ମକ କାର୍ଯ୍ୟ ଅର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ଅନୁଗମ । କାର୍ଯ୍ୟର ଆନୁଗମ
ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟ ଆନୁଗମିତ କାର୍ଯ୍ୟର ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର
କାର୍ଯ୍ୟର ‘ଆନୁଗମିତ’ ଚିନ୍ତାଧାରା ଏବଂ ଏହି
ସମ୍ବନ୍ଧାତ୍ମକ ।



स्वातंत्र्यसङ्ग्रामः : द्वितीयः सर्गः

स्वातंत्र्यसङ्ग्रामोद्देशः

वन्द्यम् एतद्दलादिजनान् पञ्चप्रभाषी कविनायकनाम् ।
ठिक्तेभ्यश्चात्तमा उच्यते एते श्याञ्छिता कथनं सूक्तिदेवी ॥ २ ॥

अनुवादः : हे सूक्तिदेवी (अरुञ्जती, वक्रदेवी) मयं तुल्य आत्मन
कारं उच्यते पवित्रितं मया प्रथम (अर्थप्रदायक)
कमलदलकाली पञ्चप्रभाषा शुक कविदेव नमस्क
विनायक (श्रीमानेक) एक आद्यत प्रथमज्ञानत कठि
अर्थय कठि प्रथम कथयन्त ।

नमामि त्वां निर्मात्रिणीं कलीनाम्बकामरुपिणं नू चिन्तयिषुःशुभम् ।
शुकदिभूताश्च सुबलप्रभालान् वन्देवता श्रीविभूतिं वि० ॥ २ ॥

अनुवादः : आम्नि कविदेव हेमर् चिन्तयिषुःशुभं निर्मात्रिणी
आकामरुपिणं (वक्रदेवी) एक प्रथम ज्ञानत कठि
यिनि अरुञ्जतीं वृत्तिभूत अशुभालान् कली वानेकम्
एक आनन मद्रुके विगतं कथन अर्थय नू अरुञ्जतीं
शुभके आम्नि नमस्कृत कठि यिनि देवी अरुञ्जतीं
समान कमलमद्रुका अशुभालान् एकेक जम्भन् ।

त्वां काल कालीम्बराश्रितान् नमो शुक कथन कालराशि ।
निरुत्तरदिभूताश्च सुबलप्रभालान् वन्देवता श्रीः ॥ ३ ॥

अनुवादः : इह नू आम्नि हेमर् कालराशि एक ज्ञानमेके
प्रथम ज्ञानत यिनि कालेव मेकठि कम्काली,
निरुत्तरदि काली श्री एक इत्येवमकाली हेमर् पद्मा
(पद्माजम्भती) यिनि निर्मित काल वन्देवता श्री ।



आमेव काश्चिन्नू कालरात्रिः श्रीदयी कृत्स्नैश्चैश्चरुत्तमैः।
बोलाभैर्नामीरशो भूरात्रिः ज्जरात्रि जाये परिश्रुतीति॥ ४ ॥

अनुवाद :- आम्हि दमेव कालरात्रि देव प्रनम्य जानन करि, धिति
बोलाभैर् नामीरशो श्रीदयी देवादे उरुनम
इतिना कामादेवेर जाय भूरात्रि (श्रीकृत) - व
जायेव आशी चिलनी

चोचरुपुत्रवर्ज्यं चाङ्के विहारायाम् प्रकृतिरुत्तमाम्।
स्त्रिभुवनायार्थी वज्रमहृत्स्निश्चरुत्तमि वा अरुभुव न नक्षिम्॥ ५ ॥

अनुवाद :- आम्हि विहारा नामक दमेव प्रकृतिमे प्रनम्य करि
याव देवदेव अमरु चोचरु, पुत्रवर्, वर्ज्य, अमृत-
अमृत स्त्रिभुवनाय, अर्थ, अतिवज्रम, कृत्स्निश्चरुत्तमि
अरुभुव आङ्के, उभय वज्रमकल देवदेव अतिवज्र
आङ्के अदेवदेव काल प्रतीत इम - अर्थव नामा-
कामात्रक अर्थिकता प्रकृतिरे करि प्रनम्य,

नमो भूमीर् दक्षिणे कराये अरुभुव अरुभुव अरुभुव।
उरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव॥ ६ ॥

अनुवाद :-
याव अरुभुव - लोभ नामात्रक अरुभुव अरुभुव
अरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव
अरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव
अरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव अरुभुव



आ दक्षिणदिशि प्रसरतः सुमेधावर्धुर्वा विराट् प्रथमः समुद्रमनुः ।
अक्षिप्रिवेली प्रसताक्षिभूला वन्दामहं कौरवर्षात्तिलुम् ॥ ५ ॥

अनुवाद :- दक्षिणदिशे प्रसरतः सुमेधावर्धुर्वा विराट् प्रथमः समुद्रमनुः ।
अक्षिप्रिवेली प्रसताक्षिभूला वन्दामहं कौरवर्षात्तिलुम् ॥ ५ ॥

वेदिकिकप्रार्थनिलीभूदसु लाजप्रार्थनित् अश्वरनुः ।
वार्धुर्-विज-हे विप्रवर्षात्तिलुम् नामा नामा विप्रवर्षात्तिलुम् ॥ ६ ॥

अनुवाद :- प्रथमः विराट् प्रथमः विराट् प्रथमः विराट् प्रथमः ।
अक्षिप्रिवेली प्रसताक्षिभूला वन्दामहं कौरवर्षात्तिलुम् ॥ ६ ॥

नादक्षिणदिशि प्रसरतः सुमेधावर्धुर्वा विराट् प्रथमः समुद्रमनुः ।
अक्षिप्रिवेली प्रसताक्षिभूला वन्दामहं कौरवर्षात्तिलुम् ॥ ५ ॥

अनुवाद :- दक्षिणदिशि, सुमेधावर्धुर्वा विराट् प्रथमः समुद्रमनुः ।
अक्षिप्रिवेली प्रसताक्षिभूला वन्दामहं कौरवर्षात्तिलुम् ॥ ५ ॥



स्वसंस्कृत्यैव ज्ञानमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति ।
एतद् आनुत्तिष्ठति ! ज्ञानमनुत्तिष्ठति एतद् स्वसंस्कृत्यैव ॥ १० ॥

अनुवाद :- एतद् आनुत्तिष्ठति ! स्वसंस्कृत्यैव ज्ञानमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति ।
ज्ञानमनुत्तिष्ठति, स्वसंस्कृत्यैव चित्तमनुत्तिष्ठति, स्वसंस्कृत्यैव
चित्तमनुत्तिष्ठति, स्वसंस्कृत्यैव ज्ञानमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति
स्वसंस्कृत्यैव प्रकृति प्रकृत्यैव ज्ञानमनुत्तिष्ठति ।

मनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति ।
अनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति ॥ ११ ॥

अनुवाद :- स्वसंस्कृत्यैव ज्ञानमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति ।
ज्ञानमनुत्तिष्ठति, स्वसंस्कृत्यैव चित्तमनुत्तिष्ठति, स्वसंस्कृत्यैव
चित्तमनुत्तिष्ठति, स्वसंस्कृत्यैव ज्ञानमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति
स्वसंस्कृत्यैव प्रकृति प्रकृत्यैव ज्ञानमनुत्तिष्ठति ।

अनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति ।
अनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति ॥ १२ ॥

अनुवाद :- स्वसंस्कृत्यैव ज्ञानमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति ।
ज्ञानमनुत्तिष्ठति, स्वसंस्कृत्यैव चित्तमनुत्तिष्ठति, स्वसंस्कृत्यैव
चित्तमनुत्तिष्ठति, स्वसंस्कृत्यैव ज्ञानमनुत्तिष्ठति चित्तमनुत्तिष्ठति
स्वसंस्कृत्यैव प्रकृति प्रकृत्यैव ज्ञानमनुत्तिष्ठति ।



दुस्मिन् रं यत्त, दुस्मिन् रं यत्तकर्ता, दुस्मिन् रं यत्त इति उच्यते कर्तुः।
दुस्मिन् रं यत्त अन्त एवम् किदुस्मिन् रं अद्विष्टं नैव।

अत्र-ह्ये सुमार्गद्वयं विद्वन्वर्तुः अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि।
अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि। २०।

अनुवादः - दुस्मिन् रं सुमार्ग, दुस्मिन् रं विद्वन्वर्तुः, दुस्मिन् रं अन्तितो
मन् सुमार्ग-शुभोत्साहसि। अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि।
अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि। अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि।
अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि। अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि।

दुस्मिन् रं यत्त अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि। अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि।
अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि। अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि। २४।

अनुवादः - अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि। अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि।
अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि। अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि।
अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि। अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि।
अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि। अन्तितो म्नाद-शुभोत्साहसि।

द्विष्टामनि द्वीनसत्तुनि नील शुकामनि म्नाद-शुभोत्साहसि।
द्विष्टामनि द्वीनसत्तुनि नील शुकामनि म्नाद-शुभोत्साहसि। २५।

अनुवादः - द्विष्टामनि द्वीनसत्तुनि नील शुकामनि म्नाद-शुभोत्साहसि।
द्विष्टामनि द्वीनसत्तुनि नील शुकामनि म्नाद-शुभोत्साहसि।
द्विष्टामनि द्वीनसत्तुनि नील शुकामनि म्नाद-शुभोत्साहसि।
द्विष्टामनि द्वीनसत्तुनि नील शुकामनि म्नाद-शुभोत्साहसि।



द्विषादिभिरुपनि निर्विभानो पुमन्स्य योमिह उरिषे लानो ।
अयोर्द्वयोर्द्वितम्यौ चिह्नतिर्विद्वितिमात्रः धलु विरालभ्याः ॥ २८ ॥

अनुवादः - श्री - इहं पुमन् अर्थनारीमात्रज्ञानं द्विषे लाने चिह्नते उरिषा
सत्रेण निमित्तं न द्विषते द्वेषमयी ज्ञानं चिह्नतिमात्रं
अनन्तरं - पुमिन् । अहं ज्ञाने चिह्नतेऽपी चिह्नतिज्ञानं ।

जिनोद्विषा येऽथ स हि संपुत्राणि प्रादाइत्यसौ अहं चिह्नतेऽपि
आविर्भूमानो नुदनेनिकाया साहसि इमेवसि अनन्तरात् ॥ २९ ॥

अनुवादः - इमिर् इहान्, इमिर् चेतन, इमिर् पुत्रं इहं इमिर् बुद्धि
इमिर् वर्तमान (जेनवर्तमान-पुत्रं वर्तमानं इहं चेतनं)
इमिर् ज्ञोतव्यं बुद्धि (बुद्धि-वर्तमानं पुत्रं चेतनं) । अहं इहं
ज्ञानं अतिरिक्तं आविर्भूमानं अनन्तरं वर्तमानं आत्मानं
इमिर् ।

इहं वर्तमानोद्विषा जिनोद्विषाया संपुत्राण्यसौ इमसि पुत्रः ।
अहं इहं इहं लोद्विषा इतः निगत्या इहं संपुत्रः पतिनीति
अहं इहं ॥ ३० ॥

अनुवादः - इमिर् वर्तमान, अनुद्विषायाः जिनो चिह्नते पुमन्स्य
इमिर् ज्ञोतव्यं बुद्धि इमिर् । चिह्नतेऽपि सत्यं चिह्न-
पतिनीति इहं इहं संपुत्रं चिह्नते-वसन्ते
इमिर् । अतएव संपुत्रं अर्थनारीमात्रं ज्ञानं
अप्यस्य आत्मानं पुमन्स्य ।



पथे रिनानात्प्रचरात्प्रमत्त! प्रीतिरिति! अलिनप्रमिच्छे।
विन् विन् म मप्रमि निजाविकार प्रमत्त विविदुमुगोषीमि ॥ १९ ॥

अनुवाद :- विना साधनात् अथवा आकाशे विचरन्कारी, वरनीते
प्रमत्तकारी, ज्ञान प्रमत्त कारी प्रमत्त मध्ये विचरन्-
मे आनन्दा अविकार/कर्तव्य ज्ञान मित्ते प्रमत्त द्वारा मानित-
इत्येहिल।

निश्चिप्रवृत्ते; मृत्, मृत्तियुक्ते से वृत्तीते निमित्तात्मनश्चम्।
मृत्ता मदा विधीति त् वरीद्वय मृत्तातुदर्युगनि कालकाम् ॥ २० ॥

अनुवाद :- उच्ये चित्त! प्रमत्तकरण; आनन्दि सर्वदा मृत्तियुक्तमथ
कार्त्तमथर्वय रचनाकारे शुद्ध आनन्द, मृत्ता सर्वदा आनन्दात्
वृत्तिते ज्ञान-प्रमत्त आनन्द, मृत्तियुक्ते यदि एक
मृत्तियुक्ते आनन्दे तत्र प्रमत्तत्त अत्र कराल जीव द्वारा
आनन्दे ज्ञाने कराले तत्र प्रमत्त मृत्त।

न मृत्तियुक्ते न च नदमार्त्तदुग्धि-काम्यः प्रमत्तमोक्षमत्त।
मृत्तियुक्तेमार्त्तप्रमत्तियुक्तेमार्त्त मृत्तियुक्ते मृत्तियुक्ते मृत्तियुक्ते ॥ २१ ॥

अनुवाद :- इह प्रमत्तमोक्षे आनन्दे द्वारा ज्ञाने विदुर्त्त काम्यम-
ना मृत्तियुक्ते ना नदमार्त्त। आनन्दे मृत्तियुक्तेमार्त्त-
नदमार्त्त मृत्तियुक्ते मृत्तियुक्ते मृत्तियुक्ते मृत्तियुक्ते
मृत्तियुक्ते तत्र आनन्दि मृत्तियुक्ते, आनन्दे मृत्तियुक्तेमार्त्त
काम्ये आनन्दे मृत्तियुक्ते मृत्तियुक्ते मृत्तियुक्ते मृत्तियुक्ते।



आनन्दमयीकसमुद्रं त्रयं अथोक्तं नित्यं हि जरीकृतीति,
कपुडिमां नातिवतां अत्रागिष्यन् सुन्दरं न च एतद्वीमि ॥ २२ ॥

अनुवादः - आनन्दकण्ठं चतुर्गुणं अत्रागिष्यन् समुद्रं ह्येतदत्र मन्त्रे
नित्यं आह। किञ्च ह्येतन्न एतत् कपुडिं सुन्दरं नातीति-
कपुडिं अत्रां आः सुन्दरं कपुडिं यथाह्ये इति च उदिमं
पुण्यं एतदत्र। एतन्तु इति न च सुन्दरं न च। इत्यत्र
वदन्त एतन्तु इति न ह्येतदत्र मन्त्रे अत्रागिष्यन् नित्यं
आह। इति अत्रां मन्त्रे अत्रां इति उदिमं आह।
इति इति एतन्तु इति अत्रां इति उदिमं आह।

इत्यादिकान्तिव त्रयं हादिकान्तिव मत्र सुन्दरं सुन्दरं।
नामीनिवतां वरिष्यमानं सुतेतां इतिहं अगिष्यन् ॥ २३ ॥

अनुवादः - त्रयं कान्तिं हादिकान्तिव आदमं दिष्टं प्रमनं एतद्वीमि,
मेतन्तु सुन्दरं सुन्दरं नामीनिवतां वरिष्यमानं इतिहं
इतिहं प्रदानं कर्तुं आह।

आ विवतामत्रां पुत्री विवतामत्रां जीवितवती कान्तिवतामत्रां,
मेतन्तु सुन्दरं कान्तिवतामत्रां सुतेतां इतिहं प्रदानं ॥ २४ ॥

अनुवादः - अत्रि विवतामत्रां विवतामत्रां, आ मेतन्तु सुन्दरं सुन्दरं
कान्तिवतामत्रां सुन्दरं, सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं इतिहं
इतिहं सुन्दरं। इतिहं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं इतिहं
इतिहं सुन्दरं सुन्दरं।



आर्षं बालं चरितं पद्यैश्च विज्ञेयं पूजितं हि प्रबुद्धिदम् ।
यत्प्रवृत्तनाथं हन्ति तदाः सतः प्रमत्तास्तु यत्प्रवृत्तनाथः ॥ २८ ॥

अनुवादः - बर्षा बालं ज्ञानं अगच्छेत् यत् प्रबुद्धिदम् । मयादत्तं पूजा
प्रदानं अगच्छेत् यत् प्रबुद्धिदम्, तदा यत्प्रवृत्तनाथं वरुणं अगच्छेत्
यदा कश्चिन्मनुष्यः (अज्ञानं करोति), ते सतः प्रमत्तास्तु यत्प्रवृत्तनाथं
विज्ञेयं अगच्छेत् प्रमत्तं विज्ञेयं वरुणम् ।

अप्राप्तिं विज्ञेयं च यत्प्रवृत्तनाथं वरुणं विज्ञेयं विज्ञेयं विज्ञेयं ।
इति कारिकायां यत्प्रवृत्तनाथं वरुणं विज्ञेयं विज्ञेयं विज्ञेयं ॥ २९ ॥

अनुवादः - विज्ञेयं च यत्प्रवृत्तनाथं वरुणं, सतः प्रमत्तं
वरुणं अगच्छेत् यत्प्रवृत्तनाथं, यत्प्रवृत्तनाथं- यत्प्रवृत्तनाथं विज्ञेयं
अप्राप्तिं च । प्रमत्तं विज्ञेयं वरुणं अगच्छेत् यत्प्रवृत्तनाथं
वरुणं, अगच्छेत् यत्प्रवृत्तनाथं अगच्छेत् यत्प्रवृत्तनाथं
वरुणं- यत्प्रवृत्तनाथं यत्प्रवृत्तनाथं यत्प्रवृत्तनाथं ।

आपुत्रं अर्षिभ्यो नमस्कृत्यैव प्रवृत्तनाथं वरुणं विज्ञेयं ।
अप्राप्तिं वरुणं यत्प्रवृत्तनाथं यत्प्रवृत्तनाथं ॥ ३० ॥

अनुवादः - अर्षिभ्यो नमस्कृत्यैव, विज्ञेयं वरुणं, वरुणं वरुणं,
वरुणं वरुणं अगच्छेत् यत्प्रवृत्तनाथं वरुणं वरुणं
वरुणं यत्प्रवृत्तनाथं यत्प्रवृत्तनाथं यत्प्रवृत्तनाथं ।



मेरुयथा हूमिर्वारुणेकान् हूमेर्वारुन् दिव्यु चिदिभ्यु ईते ।
निश्रित्युमा यः प्रतिमानलोको ईडु तमा अमरुनमन्नादुमिभ्यु ॥ ७१ ॥

अनुवादः - मेरु अकारं सुमेरु अर्थे- विद्विन् दिव्ये मेरु हूमिके
श्रुतिं कुरु तेमनि आरुणं कर्णारीजी महाराज आरुण
कादुमदि आरुणके श्रुतिं कुरु प्रतिमानाली हारुणी आरु
हे श्रुतिं कर्तेन। अरुण्य ईडु अनेक निश्रि विद्विन्
श्रेणे- लोके-चिदोके इतरः श्रेणति- प्रकाशिते कर्तेन।

श्रुतुदीयः कर्णप्रदिभ्युः सनातना ईरु ईवात्तदेहः ।
प्रजाविदुता सललाटेनेप्रदिनेलोचने। अरु वरु सारु ॥ ७२ ॥

अनुवादः - आदिः श्रुतु आसी कर्णारीजी महाराज अरुण एक श्रुति-हिन
आरु श्रुति सनातन ईरु सारु कर्ते। सनातन ईरु सारु
दीयु कर्णारीजी महाराज निद प्रजावनी विदुति-
कारु सारु प्रिलोचन हिन।

वेदार्कान्दुर्गतिरुदुमद्वरु नितरु नृलोकरुदिभ्युमरुषः ।
ईरीतेनोमरुवतम अमरु अमरुवतुमरुहनि सनुः ॥ ७३ ॥

अनुवादः - कर्णारीजी महाराज वेद-वेदार्कं अद्वि वरुमके
मरुमके इत वरुवतु वरु अरुवरी वरु वरु कर्ते
वरु अरुवरी महावतु (वेदवतु निरु अमरु अरुवतु)
वने अरुवतु कर्तेन।

अमरु प्रुवतुमरु विप्रवतुम अरुवरीनरुवरीकतु ईरुवतुम ।
मोसीमरुवती- अरुवतुमरुवतुमः अरुवतुमरुवतुमः ॥ ७४ ॥

अनुवादः - वरुवतुमरु इरुवतु मरुवती (अरुवतुमरुवती मरुवती) व-



अस्मीति धर्तुः अ ह्यस्य प्रसन्नो मते मनेमस्य अहं कलसे ।
करीरकद्वं विजयात्तु मिस्रेहातिनीतिः धनू आशुअलक्ष्मी ॥ ७५ ॥

अनुवादः - येनास्य अस्मीति अत्र प्रसिद्ध, येषामने मनेमस्य
अदिदे, कानी लक्ष्मीकान् विवाहमान, मीर आसनत्राहृष्टि
हस्तु हस्तुहमतिरामता प्रसिद्ध ।

आरु कालगरीश्विर लेलिहानम् दूतीं विरसिरे करालवृत्तम् ।
मता यजोदेव मशानुदेवमलालम्त साध्विमिनी उदङ्गा ॥ ७६ ॥

अनुवादः - यमन-देवे अत्र मशानुदेव आसन अशुभरतां अर्धे-
कृष्ट-हस लालन-पालन करुदिलन, तेमन-देवे पात्रुता
गमदङ्गा-लक्ष्मीकान्-द्वयं अत्र लेलिहान अशुभ-विदुती
अहम् । कालगरीश्विर अमन कराल अहम्, पतिनि दृष्टि
प्रसन्नो लालन-पालन करुदिलन ।

सप्तमल्लिखितातिरामता तस्या वदुव तात्रा आदि प्रकरणा ।
आशुअलक्ष्मीः सातिराललीलम् अमिर्मदाश्विर सेकलादेः ॥ ८० ॥

अनुवादः - यमन-देवे अत्र मशानुदेव आसन अशुभरतां अर्धे-
कृष्ट-हस लालन-पालन करुदिलन, तेमन-देवे पात्रुता
गमदङ्गा-लक्ष्मीकान्-द्वयं अत्र लेलिहान अशुभ-विदुती
अहम् । कालगरीश्विर अमन कराल अहम्, पतिनि दृष्टि
प्रसन्नो लालन-पालन करुदिलन ।

एतत्तु-आ-ना विदुती करुको अशुभरतां अमिकादानी ।
ह्यो चिनुमामाप्रद्वरामतम् दिवामुदगा ननु नो कृतमि ॥ ८२ ॥

अनुवादः - इत्ये मता-निता अमन ना अशुभरतां अत्र अत्र
कृतमि-हिलन, निमित्त काल करुदिलन एतत्तु-आ-ना
अत्र अत्र नुमी अहम्हिलन ।



• निर्वाचित ग्रन्थपञ्ची •

- १। हरिश्चन्द्र, डा: अरुण कुमार शर्मा - " आधुनिक अरण्यकृत आर्यशास्त्र का आधुनिकीय अर्थसूत्र."
- २। डेवरायण, बलदेव - ' आधुनिक अरण्यकृत नाटक '
- ३। पन्हु, डा: शिवीमठल्लु ' आधुनिक अरण्यकृत आर्यशास्त्र अर्थसूत्र ' सिद्धान्तिसिद्धिकामन.
- ४। दाशर, रामकृष्ण, ' आधुनिक अरण्यकृत आर्यशास्त्र ' अर्थसूत्र प्रकाशन, काठमाडौं, २०१८.
- ५। कुमार, हरीश, ' आधुनिक अरण्यकृत आर्यशास्त्र ' अर्थसूत्र प्रकाशन, दिल्ली, २०१९.



• समुदाय प्रशस्ति •

- १। आधुनिक अल्पकृत साहित्य 'सनातन' कवि हूँ ?
- २। "जातनुसमूहम्" महाकाव्ये चित्रमण्डु आलोचना कर।
- ३। "जातनुसमूहम्" यथाथ महाकाव्य कित्ता चित्र कर।
- ४। कवि हूँ प्रसाद द्विवेदी - जीवनी चित्रमण्डु-
समूहम् या वर लेख।
- ५। "जातनुसमूहम्" महाकाव्ये द्वितीय सर्ग चित्रमण्डु-
आलोचना कर।
- ६। बाली-लक्ष्मीवर्मा च- जीवनचरित आलोचना कर।